मादा पशुओं में गर्भाधान के समय ध्यान रखने योग्य बातें

डॉ. विकास सचान
सहायक आचार्य, वेटरनरी विश्वविद्यालय, मथुरा

मादा गाय एवं भैंस को मुख्यतः पशुधन एवं दुग्ध उत्पादन के लिए पाला जाता है। मादा पशु के उचित समय में गर्मी (मद) में आना एवं उचित समय पर गर्भाधान (कृतिम अथवा प्राकृतिक) करवाकर अधिक से अधिक लाभ लिया जा सकता है। परन्तु पशुओं मे मद के लक्षण एवं गर्भाधान के उचित समय के सम्बन्ध में पशुपालको को कम जानकारी होने के कारण कई तरह के नुकसान का सामना भी करना पड़ता है। इस लेख (प्रश्नोत्तरी) का अभिप्राय पशुपालको को उक्त सम्बन्ध में कुछ आधारभूत जानकारियां प्रदान करना है।

प्रश्न - गाय और भैंसों में मदकाल के लक्षण क्या हैं और गर्भाधान का उचित समय क्या है?

उत्तर- पतला श्लेष्म या जेरी आना, बार बार रंभाना, अधिक बेचैनी, दूध का कम होना/ डोंका करना (थानों में कम मात्र में परन्तु बार बार दूध का उतरना), दूसरे पशुओं पर चढ़ना, दूसरे पशु के चढ़ने पर शांत खड़े रहना, चारा कम खाना, शारीरिक ताप में मामूली वृद्धि होना, बार बार मूत्र त्याग करना, इत्यादि मदकाल के लक्षण हैं। पशु में इनमे से एक, दो या कई लक्षण मद के समय देखे जा सकते हैं। इनमे से सर्वोत्तम लक्षण दुसरे पशु के चढ़ने पर शांत खड़े रहना माना जाता है। ये मदकाल सामान्यतः केवल 12 से 18 घंटो का होता है। श्लेष्म स्राव के पतले एवं पानी की तरह साफ़ होने पर ही गर्भाधान कराना चाहिए। श्लेष्म स्राव आने या अन्य लक्षण दिखने के २४ घंटे के भीतर गर्भाधान करवा लेना चाहिए। अधिक देर करने पर अंडे के निकल जाने या उसके मृत हो जाने पर गर्भ रूकने के आसार कम या न के बराबर हो जाते हैं। श्लेष्म स्राव या जेरी के गंदे, सफ़ेद या थोड़ा पीलेपन में होने पर गर्भाधान पशुचिकित्सक की सलाह के बाद ही कराना चाहिए। ब्यांत तथा गर्भधान के बीच कम से कम 60 दिनों का अंतर रखना आवश्यक है।

प्रश्न - प्रथम बार पशु को गर्भित कराने के समय किन चींजों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर- प्रथम बार गर्भाधान के समय गायों की उम्र कम से कम ढाई साल तथा वजन औसतन 250 किलो और भैंसों की उम्र तीन या साढ़े तीन साल तथा वजन 275 किलो के लगभग होना चाहिए। पशु में प्रथम मद काल दिखाई देने पर उसे गर्भित नहीं कराना चाहिए । उस समय मादा पशु का गर्भाशय पूर्ण विकसित ना होने के कारण गर्भ ठहरने के आसार काम होते हैं । अतः दो या तीन मद छोड़ने के पश्चात ही पशु को गर्भाधान कराना चाहिए । गर्भाधान के पहले पशु को पेट के कीड़ों अर्थात अंतःपरजीवी को मारने की दवा और पोषक खनिजों की पर्याप्त मात्र चारे के साथ देनी चाहिए । गर्भाधान के समय संक्रमित सांडो, अनुचित तरीकों तथा जीवाणु युक्त यंत्रो का प्रयोग नहीं करना चाहिए । गर्भाधान के पहले और बाद में कम से कम 15 मिनट पशु को शांत रखना चाहिए । गर्भाधान के बाद पशु की पीठ और पिछले हिस्से में ठंडा पानी डालने से उसके गर्भित होने की आसार बढ़ जाते हैं । अधिक शोर शराबे तथा तनावयुक्त वातावरण में गर्भाधान करने से पशु के गर्भित होने के आसार कम होते हैं ।

प्रश्न - पशु के मद में ना आने के क्या कारण होते है?

उत्तर- सामान्यतः गर्भावस्था, गर्भाशय में संक्रमण और मवाद भर जाना, गर्भित शिशु का गर्भ में ही मर जाना, गर्मी का सही समय पर अवलोकन ना करना, किसी प्रकार का रोग होना, निष्क्रिय अंडाशय होना, अधिक दुग्ध उत्पादन के कारण तनाव होना, अंतः तथा वाहयपरजीवी का होना, अंतःस्रावी ग्रंथियों का कार्य ना करना, असंतुलित हॉर्मोन, पुटिय अंडाशय, असंतुलित चारे में पौष्टिक तत्वों की कमी होना, किसी भी कारण से पशु का तनावग्रस्त होना आदि पशु के मद काल में ना अने के कारण होते हैं ।

जब भी पशुपालक का मादा पशु गर्मी में आये तो उक्त जानकारियों की मदद से गर्भाधान को सफल बनाया जा सकता है जिससे पशुपालक अधिक से अधिक लाभ कमा सकता है ।